उपसंहार...

यमुना तटक ओहि काष्ठ-दुर्गक चारूकात कुरुग्राम बसि गेल।

वास-व्यवस्था एकटा निश्चित योजनाक अधीन भेल छल। दुर्गमे एकदिस कांच ईंटा आ तृणाच्छादित राजभवन बनल छल, जकरा दास राजा बल्बूथक शिल्पी सभ बनौने छल। दोसर दिसू ऋषि ग्रामसँ आयल किछु ऋषि तथा महर्षि सभक आवास व्यवस्था छल। किछु ऋषिगण ओतहि सरस्वती तट पर रहि गेल छलाह। महर्षि ऋतुवित जे एतहु प्रधान पुरोहित छलाह, हुनक मध्यमे आवास छलनि।

तेसर दिस दास राजा बल्बूथ आ प्रधान सेनानीक भवन बनल छल।

ताहिसँ किछुए हँटिक' किछु अन्य प्रमुख जनक आवास गृह बनल छल।

किन्तु अधिकांश जन दुर्गसँ बाहरे बसल छल, जकर सभक रुचि अथवा व्यवसाय कृषि एवं पशुपालन अछि।

दुर्गक बाहर, गोलाकारमे अधिकांश उद्योगी शिल्पी जन बसल छल। ई सभ आवसँ एतय स्थायी हाट लगाओत जतय नित्य आवश्यक उपयोगी वस्तु सभ भेटल करत। स्वयं दास राजा बल्बूथ आबिक' व्यवसायक सभटा व्यवस्था क' गेल छथि।

ओ गंगो तट पर गेल रहथि।

ओतय हिनके निर्देश पर हुनक पुत्र हय आ नय नगर व्यवस्था कयलक अछि। छोट सन काष्ठ दुर्ग बनल जाहिमे एकमात्र राजभवन, प्रधान सेनानी भवन तथा मंत्राक्ष भवन बनल अछि। हय आ नय अपना लेल दुर्गसँ बाहरे भवन बनौलक अछि।

दास राजा बल्बूथ वाणिज्यमे अति अनुभवी छथि। गंगाक भविष्य ओ देखि लेलनि। तें दोसर दिस हटिकऽ हय आ नयक भवन तटे पर बनल। तकरे चारूकातसँ बसाओल गेल अछि अपन मोअनग्रामजन' कें।

स्वयं यमुने तट पर रहताह। यद्यपि आव वृद्ध भ' गेल छथि तैयो राजा असंग आ सोमाश्व मंत्राक्षक आग्रह पर यमुना आ गंगाक तट पर वाणिज्य-व्यवसायक सभटा व्यवस्था स्वयं देखताह। हुनके निर्देश पर एहि प्रसंगमे सभटा कार्य होयत, जाहिसँ लोक सभकेँ कोनो प्रकारक असुविधा नञि होइक।

लोकक यैह असुविधाकें देखैत दुनू जनपदक वाणिज्य व्यवस्था अपना हाथमे ल' लेलनि अछि, जेना सिन्धुमे छल। ओकर सभटा पणि एहि दुनू क्षेत्रमे आविक' वसि गेल अछि तथा जनपदक लोककें लवण, वस्त्र, प्रस्तर, कम्बल, अलंकार, वासन, काष्ठ वस्तु तथा धातुक वस्तु सभक आपूर्ति करय लागल अछि। लोककें कोनो असुविधा नञि हो, कोनो कष्ट नञि हो, कोनो अभाव नञि रहैक।

आ तें विनियमक मानदंड धेनु तथा अन्नक अतिरिक्त ई स्वर्ण निष्क सेहो रखलनि अछि। पणि सभकें एहिसँ बहुत सुविधा भेलै अछि। वाणिज्य, व्यवसाय बढ़ि गेल।

एहि आर्य प्रसारक बात सुनि वितस्ता तट धरिक बहुत रास आर्य तथा अनार्यजन आबि-आबिक' एहि दुनू गंगा आ यमुना क्षेत्र मे बसि गेल अछि। ओम्हर वर्षाक बहुत अभाव भ' गेल छलै आ क्रमशः होइते जा रहल छलै। एम्हर वर्षा सेहो बेसी होइत छै आ भूमि सेहो पर्याप्त आ उर्वर छै।

लोक एहि दुनू क्षेत्रमे वन्य प्रांतरकें साफ करैत गेल आ बसैत गेल। विभिन्न वस्तुक आपूर्ति करैत गेल दास राजा बल्बूथ तथा ओकर दुनू पुत्र हय आ नय व्यावसायिक कौशल दुनूठाम समयानुकूले छल।

दुनू स्थानक लोक दासराजा बल्बूथक नगर-व्यवस्था, ग्राम-व्यवस्था तथा वाणिज्य-व्यवस्थासँ अति प्रसन्न छल। जीवनक सुविधा बढ़ि गेल छलै। सुख बढ़ि गेल छलै।

दुनू स्थान यमुना आ गंगा तट पर पैघ-पैघ यज्ञ भेल छल। दुनू स्थान पर राजसूय यज्ञ भेल। प्रधान पुरोहित महर्षि ऋतुर्विते प्रधान ऋत्विक बनल रहथि। दुनू यज्ञमे सुवास्तु तटवासी वयोवृद्ध महर्षि अरिष्टनेमि सैह ब्रह्मा बनल रहथि। दुनू स्थान पर विशिष्ट सहभोज भेल छल। दुनू स्थान पर सहभोजमे प्रधान पाकशास्त्री बनल रहथि वाशिष्ठ भासुरे। दुनू स्थान पर ओ दू-दू बेर क्रुद्ध भ' क' रूसल छलाह। दुनू स्थान पर ऋषि कालस्वने हुनका मनौने रहथि।

दुनू स्थान पर बहुत रास दान-प्रदान ऋषि-महर्षि लोकनिकेँ भेटल रहनि।

दुनूक व्यवस्था सोमाश्व मंत्राक्ष कयने रहथि दास राजा बल्वूथक दिससँ। ओ राजन सभकेँ बहुत रास अन्न सेहो देने रहथि। ई अन्न तथा अन्य ऋण घुरा देल जायत। दास राजा बल्वूथ विहुँसल रहथि। प्रसन्ने भेल रहथि।

प्रसन्न छलाह आगत महर्षिगण जाइत काल, आश्वासन भेटल छलनि-ओहि नव स्थापित गुरुकुलमे एम्हरसँ ब्रह्मचारी बटुकगण जाइत रहताह श्रुति-अभ्यास लेल।

आश्वासन भेटल छलनि--ओम्हर सँ जे लोक एम्हर आवि बसय चाहत, औताह।

आगत महर्षिगण चलि गेल छलाह।

प्रधान पुरोहित महर्षि ऋतुर्वित अभिषेकक अवसर पर अति दृढ़तासँ दुनू स्थान पेँर घोषणा कयने छलाह--'अभिषेक कृत्य सम्पन्न भेल, राजन् सिंहासनाधीन भेलाह। जानि लिय' ध्यानसँ सुनू। राजा, महान देवक प्रतिनिधिक रूपमे समस्त प्रजाजनक रक्षा करताह, सम्वृद्धि देताह, न्याय करताह शांति स्थापित करताह। आवसँ राजा एहि क्षेत्रक समस्त देव भूमिक वितरण, महान देवक दिससँ हुनक प्रतिनिधि बनिक' अपन प्रजामे समान रूपसँ करताह। सभ प्रजा समान होयत, हुनका सभ कें समान न्याय भेटत। राजनक आज्ञा, देव-आज्ञा मानल जायत। जे क्यो राजनक आज्ञाक अवहेलना करत, ओकरा पर देव-कोप होयत, ओकरा देव-दंड भेटत। सतर्क। सभ क्यो सतर्क भ' जाइ-आवसँ राजने अपन आर्य-क्षेत्र मे सर्वोपरि हेताह, सर्वमान्य हेताह तथा सर्वस्वीकृत हेताह। शांतिः शांतिः शांतिः।'

किछु दिन विवाद चलल छलै।

आ विदथ? सभा आ समिति?

सभ गौण भ' जायत।

'राजन सर्वोपरि रहताह।'

'एहन प्रथा तँ नञि अछि?'

'आबसँ होयत। एहि नव आर्यावर्त मे यैह प्रथा चलत। आबसँ ब्रह्मर्षि देशक प्रथा एतय नञि चलत। स्थान, भूमि आ काल मे परिवर्तन भ' गेल अछि, प्रथा-परम्परामे सेहो परिवर्तन अनिवार्य अछि।'

सोमाश्व मंत्राक्ष कहैत रहैत छलाह।

कहैत रहैत छलाह प्रधान पुरोहित महर्षि ऋतुर्वित।

'देखलहुँ नञि, गंगा तटक आर्यावर्तक राजा बनलाह दीतिहोत्र। हुनका कोन विवथ बनौलकनि? कहाँ भेल निर्वाचन? के करत निर्वाचन? कतय रहल विदथ? कहाँ रहल सभा-समिति?'

विदथक पुरान सदस्य अवाक रहि गेलाह।

मौन भ' गेलाह। गौण भ' गेलाह।

चारूकात नव-नव लोक आवि गेल छल।

'दास सभकें सेहो स्वतंत्र कृषि अधिकार भेटि रहल अछि? सुनलहुँ?'

'कियैक ने? ओ सभ प्रजा नञि थिक? कियैक नञि भेटय समान अधिकार? कियैक नञि भेटय समान न्याय? ओहो सभ तँ आर्यवृत्तमे आवसँ आविए गेल अछि। देखलहुँ नञि, कतेक दिनधरि व्रात्यष्टोम यज्ञ होइत रहल? दासजन आर्यवृत्तमे अवैत गेल, जकर जेहन यौग्यता, ओहि वर्ण मे गेल, आव शूद्रो होयत।'

'शूद्र की?'

'वैह दासजन आवसँ शूद्रे कहाओत, एहिसँ ओसभ गौरवक अनुभव करैत अछि। कियैक ने ओकरा सभकें हमसभ गौरव दी? कतेक सेवा करैत अछि हमरा सभक?'

यैह बात सभ होइत रहैत छल।

बहुत दिनधरि होइत रहल। विभिन्न वर्ग मे, विभिन्न स्थान पर आ विभिन्न अवसर सभ पर।

कलान्तर मे सभ स्वाभाविक भ' गेल।

यमुना बहय लागल अपन गतिमे।

गंगा बहैत गेल अपन गतिमे।

सूर्योदय होइत गेल।

सूर्यास्त होइत रहल।

आब लोक उषाकें बिसर' लागल।

लागि गेल कृषिमे, पशुपालनमे, उद्योगमे, वाणिज्यमे आ पौरोहित्यमे।

ब्राह्मण पौरोहित्य करावय लगलाह।

ब्राह्मण बटुक लोकनिकें श्रुति अभ्यास करावय लगलाह। गुरुकुल भरल रहैत छल बटुकलोकनिसँ।

सामगान पसरैत रहैत छल वातावरणमे।

यज्ञ कृत्य होइत रहैत अछि।

शूद्र सभकें यज्ञ करवाक तथा अन्य आर्यकृत्य करवाक अधिकार नञि भेटल।

आगत महर्षि कहने रहथि-'नञि, ई सभ आर्यभाषा नञि जनैत अछि, उच्चारण नञि क' पाओत। आ एहि उच्चारण दोषसँ श्रुतियोक अहित आ अपनो अकल्याण हेतैक। एहि उच्चारण दोषक कारणे वृत्रासुरक नाश भ' गेल छलै। हमसभ दास आ शूद्र जनक नाश नञि, विकास चाहैत छी, अहित नञि, हित चाहैत छी। ओहो हमर सभक यजमाने थिक। हमसभ यजमानक शुभ चाहैत छी, लाभ चाहैत छी।'

शूद्रजन प्रसन्न भेल रहय।

प्रसन्न छल यमुना तट प्रसन्न छल गंगा तट।

गंगा तटक मंत्राक्ष भवनमे अति उत्साहसँ सौत्रामणी यज्ञ सम्पन्न भेल। एहि यज्ञमे सोमरस पानक प्रधानता रहैत अछि। जे सोमरस पान नञि क' सकैत अछि, ओ पयः पाने करैत अछि, किन्तु पान अछि अनिवार्य।

सोमा आ शाश्वती सोमरस पान नञि कयलनि। पयः पाने कयने छलीह।

सोमा व्यवस्थापनमे लागलि छलि। आब आर्य यज्ञक सभटा बात बूझि गेलि अछि। अपन भ्राता हय आ नयकें डँटैत रहैत अछि 'नञि, एना नञि, एना।'

हय आ नय सोमासँ बहुत डरैत रहैत अछि-'कतहुं 'आर्य सिसु' कोरामे खेलेबाक लेल नञि ने देक।' आ तें तन-मनसँ दुनू व्यवस्थापनमे लागि जाइत छल। ओहो दुनू पयः पाने कयलक।

लागल अछि ऋजिश्व कें सोम-पात्र देवामे। ओ पिविते जाइत अछि। कते पीबि जेतीह?

प्रधान सेनानी आटव्यसँ ऋजिश्वा विवाह क' लेलनि अछि।

राजा वीतिहोत्र देखि रहल छलाह। किन्तु जेना किछुओ नञि देखि पाबि रहल छलाह। दृष्टि जेना कतहु सुदूरमे जाक' हेरा गेल होइनि।

एहिना भ' जाइत अछि।

एहिना राज भवनक आगाँ बनल यज्ञ कुटीमे बैसल रहैत छथि। आँखि बन्न रहैत छनि। हेरायल रहैत छथि।

सान्ध्य आ प्रातः देव यज्ञ विस्तारसँ करैत छथि। यज्ञ आ श्रुतिमे अत्यधिक रुचि छनि। ओहिदिन, सान्ध्य यज्ञक पश्चात कहलनि--'ऋषि श्रेष्ठ! अद्‌भुत वात अछि...एहि अग्निकुण्ड सँ धूम्र वहराक' अतरिक्षमे चलि जाइत अछि, पुनः घुरि जाइत अछि। वृक्ष सँ वीज खसैत अछि, फेर वृक्ष वनि जाइत अछि, फेर वीज बनि जाइत अछि। नदीमे बाढ़ि अवैत अछि, चलि जाइत अछि, फेर आवि जाइत अछि...तहिना जन जन्म लैत अछि, धरित्रीक भोग भोगिक' यमलोक चलि जाइत अछि, पुनः ओकर आत्मा घुरिक' आबि जाइत अछि, वैह आत्मा सन्तानमे पवैत छी, संतान-परम्परा वनल रहैत अछि, आत्मा-परम्परा वनल रहैत अछि, आत्मा अमर अछि।

राजा वीतिहोत्र एक क्षणक लेल चुप भ' जाइत छथि। चारूकात अति शांत आ स्निग्ध भावसँ देखैत छथि।

सभ सुनैत रहैत अछि।

सुनैत रहैत छथि प्रधान सेनानी आटव्य, सुनैत रहैत छथि अथर्वण श्रुताश्व, लोमा, स्वाहा तथा ऋषिगण एवं अन्य जन।

ओ पुनः कह' लगैत छथि-'एहि धरित्री आ अंतरिक्षक वीच जतेक जीव-जन्तु अछि, ओ सभ एकटा अप्रत्यक्ष सत्ताक सृष्टि थिक, वैह थिकाह, सहस्र शीर्षाः पुरुषाः सहस्राक्ष। वैह हमर इन्द्र-मित्र-वरुण-वैश्वानर थिकाह। ओ निराकार छथि। किन्तु निराकार होइत साकारक सृष्टि करैत छथि। आ तें एहि सृष्टिमे एकटा क्रम अछि, एकटा गति अछि, एकटा लय अछि आ एकटा नियम अछि। एही नियमसँ सृष्टिक संचालन होइत अछि। वैह सचालक थिकाह परमसत्ता, ईश्वर। वेह ईश्वर छथि व्रह्मा, जनिक स्तुति हमसभ विभिन्न नामसँ करैत छी। ...हमसभ ओहि व्रह्माक अंश थिकहुँ, ओहि पूर्णक अंश...। वाह्य रूपसँ हमरा सभमे जे अन्तर हो, आभ्यांतरिक रूपसँ हम सभ एक थिकहुँ...।'

एहिना ओ अद्‌भुत बात सभ कहवामे डूबल रहैत छथि। राज-कार्यमे कोनो रुचि नञि रहैत छनि।

राज तँ चलबैत छथि पंचजन अर्थात् सोमाश्व मंत्राक्ष, प्रधान सेनानी आटव्य, महान वणिक् हय आ नय तथा स्वयं भगवती ऋजिश्वा।

ऋजिश्वा कहल करैत छथि, यैह पंचजन तँ गंगाक तट पर जीवनकें जीवन बनौताह।

ऋजिश्वाकेँ सभ पांचाली कहैत अछि। हुनको ई नाम नीके लगैत छनि।

'नीक छैक, यमुना तट पर कुरु आ गंगाक तट पर पांचाल। किन्तु भगवती लोमा! अहाँ आइ काल्हि किछु अन्यमनस्क जकाँ रहैत छी?'

अथर्वण तँ अद्भुते क' रहल छथि आइकाल्हि?' लोमा बजलीह।

'अद्भुत? से की?' ऋजिश्वा चौंकि उठैत छथि।

'ओ ब्रह्मचारी बटुक सभकेँ तकैत रहैत छथि।'

'कियैक गुरुकुल चलौताह? तखन भैषज उपचार के करत?'

'नञि, ओ तँ करबे करताह। अपन मंत्रो सिखौताह।'

'अपन मंत्र? ओ तँ गुरुकुल मे श्रुति अभ्यास कराओल जाइते अछि, राजन् तँ उभय व्यवस्था ऋषि-महर्षिगणक लेल कराइये देलनि अछि?'

'ओ तँ हम अनार्यजनक जे अभिचार मंत्र छल तकरा अपन भाषामे बदलैत जा रहल छथि आ आब श्रुतिये जकाँ तकरा अभ्यासो करावे चाहैत छथि, जाहिसँ सुरक्षित बचि जाइक।'

'तखन?' ऋजिश्वा पूछैत छथि।

'किन्तु 'रिखीगन' ई नञि चाहैत छथि। ओ कहैत छथि जे ई अनार्य मंत्र थिक, एकर अभ्यास नञि होयत।'

'अहाँ चिन्ता नञि करू, हम राजन्सँ कहबनि...।

राजा वीतिहोत्र दोसर वर्ष पांचालमे एकटा बहुत पैघ अश्वमेध यज्ञ करौलनि। अति धूमधाम सँ। अति वृहत् रूपमे।

कुरुक्षेत्रक अतिरिक्त सरस्वती तथा दृषद्वती तट धरिक सभटा शेष ऋषि महर्षिगण उपस्थित भेल छलाह। पूर्वी यमुना तटसँ नागराज रमट तथा हुनक अनेक नागजन आयल छल।

अनेक उत्सव मनाओल गेल। अनेक दान-प्रदान भेल। अनेक दिनधरि सहभोज होइत रहल। सहभोजमे प्रधान पाकशास्त्री छलाह कुरुक्षेत्रक वाशिष्ठ भासुर। भासुर फेर कोनो बात पर रूसि गेल छलाह। फेर क्षमायाचना भेल आ ओ पाकशालामे आबि गेल छलाह।

एहि वर्ष अत्यधिक उत्पादन भेल छल। राजकोषमे बहुत अधिक अन्न आ पशु राजस्व रूपमे जमा भेल छल। सभ प्रसन्न छल।

प्रसन्न किन्तु यज्ञान्तमे नञि रहि सकल। उत्सव प्रायः समाप्त भ' गेल छल। किन्तु अतिथि अभ्यागतगण गेल नञि छलाह। दास राजा बल्बूथ, अपन

पुत्र हय आ सबक संग वाणिज्य-व्यवसायमे व्यस्त भावसँ ओझरायल छलाह। ओ सभ यमुना आ गंगा तटक व्यवसायक सम्बन्ध मे जे-जे सोचने छलाह, वेह भेल। वाणिज्य-व्यवसाय बहुत विकसित भेल आ दिने-दिन बढ़ले जा रहल छल।

कि सोमाश्व मंत्राक्ष हठात् घोषणा क' देलनि जे ओ अपन निघंटु कार्यसँ पुनः एकबेर हेलमन्द नदीक तटधरि जयताह। आ ठीके एक दिन चलियो देलनि। लोकसभ बहुत रोकलनि।

रोकलनि स्वयं सोमा, भगवती शाश्वती, राजा असंग, भगवती क्रजिश्वा, राजा वीतिहोत्र, प्रधान सेनानी आदव्य, दास राजा बल्बूथ आ साश्रुनयनसँ हय आ नय। पता नञि, ई 'आर्य रिखी' कहिया घूरत?

किन्तु हुनका कें रोकि सकैत अछि? ओ तँ जे एक बेर सोचि लैत छथि, वेह करैत छथि। लाख लोकसभ कहथि, हँसिक' टारि जाइत छथि।

-'अरे! हय नय!! अहूँ भगवती जकाँ कानय लगलहुँ? अहाँ सभ तँ सुवास्तु तटधरि जाइते रहैत छी? हम तँ गोधुमक कटैत-कटैत घुरिये आयव, देखब! एहि बीच पांचालक कोनो प्राणीकें कोनो कष्ट नञि होनि, कोनो असुविधा नञि ओइनि।' सोमाश्व मंत्राक्ष कहिये रहल छलाह कि हुनक स्व-दास रोहित अश्वकें तैयार क' कें ल' आनलक। सभ क्यो राजभवनक आगाँ उदास भावसँ ठाढ़ छलाह। ठाढ़ छलाह आकुल-व्याकुल भावसँ। हिनका के रोकत? रुकियो सकैत छथि?

सोमाश्व एकबेर हँसिक' सब दिस तकलनि आ रोहित पर चढ़ि गेलाह। पुनः चारूकात तकलनि किन्तु एहि बेर स्वयं सेहो विहोंस नञि सकलाह।

ता रोहित अश्व वायुगतिसँ यमुना दिस उड़ि गेल। सभ देखैत रहल।

किन्तु क्यो ठीक-ठीक देखि नञि पाबि रहल छल। मात्र सोमश्वकें देखबाक लेल अपन-अपन नेत्रकें पोछैत जा रहल छल, तेयो पोछि नञि पबैत छल। पाछाँ सभ बिनु पोछने देखय लागल। कुकूर पाछाँ पाछाँ दौड़ल चल जा रहल छल।

ओहि समय क्यो ककरो अपन मुँह नञि देखाब' चाहैत छल।

सभक आँखि भरैत जा रहल छलै। बहैत जा रहल छलै।

गंग बहि रहल छथि।

बहले जा रहल छथि।

❑